

ASHA ARCHIVES 3033

नमो भगवते वासुदेवाय

१५४ चिह्नं स्वकीयं विधि

संज्ञितं लिङ्गार्थं विधि

१५४ चिह्नं स्वकीयं विधि

श्रीमस्यधनं ॥ वैजयं वक्रं चंद्रवं दिगुजं चंद्रका
दनं ॥ ज वा क स म सं का लं दाला मि ला व न ग्र यं ॥ वि
विश्वन त्व रू धा शुं ग ज धा मा यू र धा य न ॥ न क प चाम
मा सी नं धा य श्री म रु यं क नं ॥ ॥ का र ना क स धा
वं ध न स्य नी ल वं शु रं गु ष्ठा नं श्री ष लं व नं ॥ दि

हं का र ना कं धा यं रु र ना थ कं ॥ ॥ वै जं कां की कू दः
जो श्री का र ना क स हा र न वा य श्री पा यू ज ॥ ॥



न॥ षष्ठं गन्धासयाय ॥ ॥ अवसर्गार्घ्याया ॥ आ
सनतय ॥ अलयाजाय चतुर्विंशत्यनमः ॥ अ
र्घ्यानां मन्त्रिणां लखनसत्तावत्तय ॥ लखधन
॥ चतुस्त्याननयूजा ॥ गंगामयनमः ॥ द्वांद्वदया
दिन षष्ठं गन्धयूजा ॥ चन्दनाकृतयूषानमः ॥

धनूमूढाकन ॥ तातुगययाय ॥ लखनहाय ॥
अर्घ्याय पूजायाय ॥ त्रिकोणयूजायाय ॥ द्वा
आधननक्कादिर्यानमः ॥ अर्घ्याय सत्तावत्तय ॥
सूर्यामलुलायनमः ॥ लखधन ॥ यूजा ॥ साम
मलुलायनमः ॥ द्वांद्वदयादिन षष्ठं गन्धयूजाया

य ॥ चन्दनाक्षतपूष्यं नमः ॥ आनिमूडाकन ॥ ॥
 धर्तृखनं महाय ॥ जलिनचन्दनं नमः ॥ आत्मन
 हृदमक्षतं नमः ॥ आत्मनयूष्यं नमः ॥ मूलन
 य ॥ अतिगय भासस ॥ गुग्गुलुपनिगय ॥ गुंघीगु
 नीतयोयामिनमः ॥ स्वाहा ॥ गुंघीयनमगुर्न

तयोयामिनमः ॥ स्वाहा ॥ गुंघीयनामवगुर्नतयोः
 यामिनमः ॥ स्वाहा ॥ ॥ यंत्रवलिविद्य ॥ वां वदूक
 नाथयवलिगृह ॥ स्वाहा ॥ कौकुरयासायवः
 लिगृह ॥ स्वाहा ॥ योयानिनीत्यावलिगृह ॥ स्वा
 हा ॥ वां नामधुयवलिगृह ॥ स्वाहा ॥ गंगल

स्वामिः॥ श्रीगुरुजीनीत्यां स्वाहा॥ श्रीमध्यामात्यां व
सु॥ श्रीअनामिकात्यां हुं॥ श्रीमायकनिष्ठोत्तां
वोष॥ स्वाहाकनगनष्टुत्यां अम्नाय रु॥ अथ
वक्तुं न्यासः॥ श्रीगुरुदेवकाययुधिष्ठिरमूर्त्यनमः॥
श्रीपूर्ववक्त्राय नमः॥ श्रीदक्षिणवक्त्राय नमः॥

ASHA ARCHIVES 3033

ममूरुयनमः॥ ॐ उरुनवकुयनकूलमूरुयनमः॥
 क्रोमिप्रिमवकुयनकूलमूरुयनमः॥ अथाज्ञना
 तः॥ ॐ नैददयायनमः॥ श्रीनिनसस्वाहा॥ श्रीनि
 स्वायेवषट्॥ श्रीनिनसस्वाहा॥ श्रीनि
 प्रयावोषट्॥ स्वाहाकनतनष्टष्टात्यांजुमुयरु

१ अथवाहनप्रसङ्गः ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ अथककुम्भदात्रजलरत्नधनं ॥ लं वं न यं हं
 ॥ २ ॥ गङ्गालताङ्गरत्नधनं ॥ त्रिंशत्संख्यं वायविश्रुता ॥
 ॥ ३ ॥ त्रिंशत्संख्यं वायविश्रुता ॥ ६ दि ॥ त्रिंशत्संख्यं वायविश्रुता ॥
 ॥ ४ ॥ दद्यात् ॥ दद्यात् ॥ गङ्गालताङ्गरत्नधनं ॥ वायविश्रुता ॥
 ॥ ५ ॥ वेदालितायां ककुम्भवर्तुषा यद्वै नृषं जलं ह्यनयत् ॥ १ ॥

रुद्र ॥ ॥ धनञ्जयमन्यासः ॥ ध्यानं ॥ ॐ उग्रमादित्य
 संकोलं यदुक्तं कंठं स्मृतं ॥ इन्द्राजिनध्वं वाक्कीर्णाय
 लान्ध्रिमाध्वं ॥ गङ्गा लमाङ्गय ॥ ॥ तर्पणं ॥ ॐ श्रीमन्
 शायविष्णुवक्त्रदहायधीमही ॥ तन्नात्रोदप्रचोदया
 न् ॥ ३ ॥ गायत्र्यां ह्युक्तं ननु यत् ॥ ॥ धनञ्जय ॥ ॐ उग्र
 ॐ अथागमयत्रीमिदमर्चनम् ॥ ३

ॐ हंसः श्रीसूर्याय अर्चनम् ॥ ॐ उग्रमादित्यवर्हि
 न्येनिर्यवेतन्नात्रुषिर्ल्ये श्रीहीमहीमायेऽदमर्चनम् ॥
 ॐ उग्रगुणपकिर्ल्येऽदमर्चनम् ॥ ॐ उग्रहीमहीमायेऽद
 मर्चनम् ॥ ॐ उग्रसारङ्गः सर्वपनिवात्रुल्येऽदमर्च
 नम् ॥ ॥ गनमात्रकाथने ॥ ॥ जय ॥ ॐ उग्रहीमही

मातां स्वाहा ॥१०॥ अथ समर्थना ॥ जैं दं जयं गृहा ल स्वाहा ॥
 मंगलं ॥ श्रीमते नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं ॥ या ह्युपग्रा
 यदवमं दीपदीपगय नमः ॥ अथ नारायणि ॥ अथ नारायणि
 प्रणम ॥ ॥ नारायण नमः ॥ नारायण नमः ॥ नारायण नमः ॥
 नं ॥ जैं नारायण नमः ॥ नारायण नमः ॥ नारायण नमः ॥ गदा

मधुधनोदवीं सूर्यविन्द कृताश्रयां ॥ मधुधनस्य ध्यानं
 ॥ लोभुकां वनधनोदवीं वृषासन कृताश्रयां ॥ त्रिनेत्रां
 वनदंष्ट्रां गूलशृङ्गकपानकं । सूर्यमगुलमधुधनं
 ध्यायन् दवीं मरुत्तमं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

चैनं ॥ विजावमनं ॥ ॥ न्यासः ॥ ऊः ऊम्नाय रुति निम
कुलकनषडम् न्यासः ॥ ॥ अर्घ्या पूजा ॥ ऊँ ह्रदया
दि ॥ चन्दनाकृतपूषा निधाय ॥ उँ चन्दनाकृतपूषा
नमः ॥ रघुनृमूलाता उग्रयदि गृन्धनगऊलनदाने
प्राकृ ॥ चन्दनादिमिलकंकावयम् ॥ ॥ गता पूजनं ॥ वे

यद्यासनाय नमः ॥ प्रयां ऊँ लि ॥ उँ ऊँ ह्रसः श्रीसूर्याय न
मः ॥ वलि ॥ ऊय ॥ उँ ऊँ ह्रसः स्वाहा ॥ १० ॥ ऊय समर्थ
॥ ॥ नानायनपूजा ॥ उँ गनूजसनाय २ ॥ प्रयां ऊँ
लि ॥ उँ ऊँ ह्रसः श्रीनानायनपूजाय नमः ॥ वलि ॥ ऊय ॥ उँ ऊँ मि
ः स्वाहा ॥ १० ॥ ऊय समर्थने ॥ ॥ निव पूजा ॥ उँ ह्रदासना

यनमः॥ प्रयांजलि॥ ॐ ह्रीं तदा निवाय नमः॥ वलि
जम॥ ॐ ह्रीं स्वाहा॥ ॥ ॐ यस्तमर्थना॥ ॥ गतामस्तुत
स्तुतं॥ ॐ जवाकस्तुम॥ ॐ यस्तुहस्त॥ ॐ नमं निवाय॥
वलिना॥ ॐ न विष्णो नस्तुतं विष्णु मस्तु॥ नमस्तु
नमस्तु॥ ॥ मस्तुस्तुतुस्तुतु॥ न्यातः॥ ॥ ॐ श्रीस्तुतु

दयकमस्तु ॥ आत्मा लीनं ॥ नाड्युत्थनादाय संहानमूढा
न्दर्शयत् ॥ ॥ प्रिनाचम्य ॥ निलिङ्गार्चनविधिः ॥ ॥
अथ आनाहिलविधिलिखित ॥ आचमनगलगुन्
मूलनमस्कावधानायामश्रुयादिकनषडङ्गन्यासः ॥
अक्षयवीनजलनयकाल्य ॥ वंजुम्याय रुद्र ॥ ३ ॥ मू

लगाय श्रीमकुंठाष्टावक्रनमस्तु ॥ १०८ ॥ असं
युजनं ॥ ॐ कानायनमः ॥ ॐ अमयनमः ॥ ॐ नागय
नमः ॥ ॐ वन्द्यमयनमः ॥ ॐ पितृत्वनमः ॥ ॐ पुत्र
पतयनमः ॥ ॐ वायव्यनमः ॥ ॐ सूर्यायनमः ॥ ॐ स
र्वसाधवत्वनमः ॥ ॥ गायत्र्यादिकं संग्राम्य ॥ १०॥

गायत्रीमकुंठाष्टावक्रनमस्तु ॥ १०९ ॥ असं
युजनं ॥ ॥ ॐ कानायनमस्तु ॥ ॐ अमयनमस्तु ॥ ॐ नागय
नमस्तु ॥ ॐ वन्द्यमयनमस्तु ॥ ॐ पितृत्वनमस्तु ॥ ॐ पुत्र
पतयनमस्तु ॥ ॐ वायव्यनमस्तु ॥ ॐ सूर्यायनमस्तु ॥ ॐ स
र्वसाधवत्वनमस्तु ॥ ॥ गायत्र्यादिकं संग्राम्य ॥ १०॥